डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 77 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | मंगलवार 26 दिसम्बर 2023 | मूल्य 2 रुपया

2 ट्रकों से 30 गौवंश जप्त, दो आरोपी गिरफ्तार

नीमच, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। बघाना थाना पुलिस ने रविवार को 2 ट्रकों में 30 गोवंश पकड़े। मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। बरामद गौवंश को गौशाला भेजा गया है।

जानकारी के अनुसार शहर के समीप गांव धनेरिया रोड स्थित दारू रोड पर बघाना पुलिस ने दो ट्रक रोके। एक में 16 तथा दूसरे में 14 गोवंश भरे हुए थे। वाहन चालकों से परिवहन संबंधी दस्तावेज मांगने पर वह दस्तावेज उपलब्ध नहीं करा पाए। इस पर बघाना पुलिस ने गोवंश को गोशालाओं में पहुंचाया। दो आरोपी विशाल पिता त्रिलोकसिंह उम्र 30 वर्ष निवासी पंजाब तथा हरवेंदरसिंह पिता गुरमीतसिंह उम्र 45 वर्ष को गिरफ्तार किया है। मामले में आरोपियो के विरूद्ध पशु संरक्षण अधिनियम की विभिन्न धाराओ में प्रकरण दर्ज किया गया है।

मोहन कैबिनेट के मिनिस्टर...

✲ कुंवर विजय शाह ✲ कैलाश विजयवर्गीय ✲ प्रहलाद पटेल ✲ राकेश सिंह ✲ राव उदय प्रताप सिंह ✲ करण सिंह वर्मा ✲ संपतिया उइके ✲ तुलसीराम सिलावट ✲ एंदल सिंह कंसाना ✲ निर्मला भूरिया ✲ गोविंद सिंह राजपूत ✲ विश्वास सारंग ✲ नारायण सिंह कुशवाहा ✲ नागर सिंह चौहान ✲ प्रद्युम्न सिंह तोमर ✲ इंदर सिंह परमार ✲ चेतन्य कश्यप ✲ राकेश शुक्ला ✲ विश्वास सारंग

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार

✲ कृष्णा गौर ✲ धर्मेन्द्र लोधी ✲ दिलीप जायसवाल ✲ गौतम टेटवाल ✲ लखन पटेल ✲ नारायणसिंह पंवार

राज्य मंत्री

✲ नरेन्द्र शिवाजी पटेल ✲ प्रतिमा बागरी ✲ राधा सिंह ✲ दिलीप अहिरवार

चुनाव जीतने वाले पूर्व मंत्री, जिन्हें इस बार मौका नहीं मिला

✲ गोपाल भार्गव ✲ मीना सिंह ✲ बिसाहू लाल सिंह ✲ भूपेंद्र सिंह ✲ बृजेंद्र प्रताप सिंह ✲ बृजेंद्र सिंह यादव ✲ उषा ठाकुर ✲ ओमप्रकाश सकलेचा ✲ हरदीप सिंह डंग ✲ प्रभु राम चौधरी

संसदीय क्षेत्र में जगदीश देवड़ा सबसे पावरफूल नेता

संसदीय क्षेत्र से एक भी नया मंत्री नहीं बना, सखलेचा और डंग को नहीं मिली जगह

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मोहन यादव सरकार में सोमवार को 28 विधायकों ने मंत्री पद की शपथ ली। उम्मीद थी कि जावरा से राजेंद्र पाण्डेय और सुवासरा से हरदीपसिंह डंग को मंत्री मंडल में शामिल किया जा सकता है। वहीं ओमप्रकाश सखलेचा और समर्थक भी पूरी तरह से आश्वस्त नजर आ रहे थे। नीमच विधायक दिलीपसिंह परिहार और समर्थकों को भी थोड़ी बहुत उम्मीद थी। लेकिन, संसदीय क्षेत्र से एक भी नया मंत्री नहीं बन पाया। जबकि, पिछली सरकार में तीन मंत्री संसदीय क्षेत्र से थे।

ओमप्रकाश सकलेचा के पिता रहे मुख्यमंत्री...

इस बार जावद विधायक ओमप्रकाश सकलेचा को भी ड्रॉप कर दिया गया है। उनके पिता वीरेंद्र कुमार सकलेचा 1962 से 72 तक विपक्ष के नेता रहे। 1971 में उनका चयन राज्यसभा के लिए हुआ। जुलाई 1967 से मार्च 1969 तक प्रदेश के उप मुख्यमंत्री भी रहे। 1977 में जनता पार्टी के शासन में वे प्रदेश के मुख्यमंत्री चुने गए थे। अब ओमप्रकाश सकलेचा की बात करें तो 2003 से लगातार जावद से भाजपा के टिकीट पर चुनाव लड़ रहे हैं। पिछली बार उन्हें मंत्री मंडल में शामिल किया गया था। पांच बार जावद से जीतने का रिकॉर्ड बनाने वाले सकलेचा को इस बार मौका नहीं मिला है।

पाण्डेय समर्थकों में निराशा...

अब बात करें जावद विधायक राजेंद्र पाण्डेय की तो छह बार राजेंद्र पाण्डेय चुनाव लड़े। जिसमें से इस बार वह चौथी बार जीते। पिछली बार मंत्री मंडल में शामिल नहीं किए जाने से नाराज उनके समर्थकों ने सोशल मीडिया में इस्तीफे तक दे डाले थे। कांग्रेस ने तो जावरा सीट से पहली बार में ही डॉ. कैलासनाथ काटजू को बतौर मुख्यमंत्री पेश किया और यह जावरा के स्वर्णिम इतिहास में दर्ज है कि यहां से भी एक मुख्यमंत्री रहे हैं। इसके बाद कांग्रेस से कुंवर भारतसिंह एवं महेंद्रसिंह कालूखेडा कैबिनेट मंत्री बने। भाजपा से कोई भी नेता मंत्री नहीं बन पाया। इस बार राजेंद्र पाण्डेय का नाम मंत्री पद को लेकर खासा चर्चाओं में था। लेकिन, उन्हें फिर से निराशा हाथ लगी।

हरदीपसिंह डंग को भी किया ड्रॉप...

2020 में उपचुनाव के बाद भाजपा के टिकीट पर दूसरी बार सुवासरा से हरदीपसिंह डंग चुनाव जीते। इसके पहले कांग्रेस के टिकीट पर दो बार 2013 और 2018 में सुवासरा से चुनाव जीते। मतलब लगातार चौथा चुनाव हरदीपसिंह डंग जीते हैं। इसके अलावा कांग्रेस सरकार के गिरने में भी कहीं न कहीं हरदीपसिंह डंग की भूमिका महत्वपूर्ण रही। इसका ईनाम भाजपा ने उन्हें उपचुनाव जीतने के बाद मंत्री बनाकर दिया। लेकिन, इस बार उन्हें ड्रॉप कर दिया गया। जबकि, प्रदेश में एकमात्र सिख विधायक होने के चलते उन्हें मंत्री मंडल में शामिल करने की संभावना बन रही थी।

दिलीपसिंह परिहार को भी थी उम्मीद...

इधर नीमच विधायक दिलीपसिंह परिहार चौथी बार विधायक बने। मोहन यादव के सीएम बनने के बाद नए विधायकों को मौका दिए जाने के कयास लग रहे थे। चौथी बार जीतकर आए दिलीपसिंह परिहार और उनके समर्थकों को भी थोडी बहुत उम्मीद यहां थी। हालांकि उम्मीदों पर पानी फिर गया।

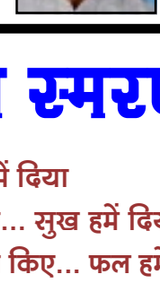

सिर्फ देवड़ा राज...

संसदीय क्षेत्र में एक भी मंत्री नहीं बना। इसके पहले मल्हारगढ़ विधायक और पूर्व मंत्री जगदीश देवड़ा को उपमुख्यमंत्री बनाया गया। अब संसदीय क्षेत्र में मंत्री स्तर के काम सिर्फ जगदीश देवड़ा ही करा पाएंगे। जबकि, उप मुख्यमंत्री का दर्जा उन्हें मिला है। मतलब कुल मिलाकर संसदीय क्षेत्र में पावर फूल नेता जगदीश देवड़ा ही होंगे।

संसदीय क्षेत्र को मंत्री पद से वंचित रखने का कारण...

संसदीय क्षेत्र को मंत्री नहीं देने के दो कारण रहे। पहला कारण रहा जगदीश देवड़ा का उपमुख्यमंत्री बनना। उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाकर संसदीय क्षेत्र को बड़ा तोहफा सरकार ने पहले ही दे दिया। इसके बाद मंदसौर जिले से मंत्री बनाने की आस खत्म हो गई थी। जावरा में राजेंद्र पाण्डेय के मंत्री बनने की उम्मीद थी। लेकिन, इस बार रतलाम से चेतन्य काश्यप को मंत्री मंडल में शामिल किया गया। इस तरह से एक ही संसदीय क्षेत्र से दो मंत्री दिए जाना कुछ हद तक इस बार मुश्किल था।

मोहन यादव सरकार में 18 विधायकों ने कैबिनेट, 10 ने राज्यमंत्री के रुप में ली शपथ...

शिवराज के 6 मंत्रियों को मिला स्थान..!

भोपाल, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश में डा. मोहन यादव सरकार के मंत्रीमंडल का विस्तार हो गया। सबसे पहले कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद सिंह पटेल, राकेश सिंह, करण सिंह वर्मा, उदयप्रताप सिंह सहित 18 विधायकों ने कैबिनेट मंत्री के रुप में शपथ ली। वहीं 10 विधायकों ने राज्यमंत्री के रुप में शपथ ली है। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर सीएम डॉ मोहन यादव व दोनों डिप्टी सीएम जगदीश देवडा व राजेंद्र शुक्ल तथा केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी राजभवन में मौजूद रहे।

पहली बार विधायक बनकर आए और मंत्री बने...

बताया जाता है कि प्रहलाद सिंह पटेल, राकेश सिंह, संपतिया उइके, नरेंद्र पटेल, प्रतिमा बागरी, राधा सिंह पहली बार विधायक जीतकर आए है, जिन्हे मंत्री बनाया गया है। इनमें प्रहलाद सिंह पटेल दमोह से सांसद और केंद्र में मंत्री रह चुके है, वे नरसिंहपुर सीट से चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे हैं। राकेश सिंह जबलपुर से सांसद रहे और जबलपुर पश्चिम से जीतकर विधायक बने, इन्हे कैबिनेट में जगह दी गई है।

शिवराज सरकार के इन 6 मंत्रियों को मिली जगह...

मोहन सरकार में शिवराज सरकार के 6 मंत्रियों को जगह मिली है। इनमें तुलसी सिलावट, गोविंद सिंह राजपूत, इंदरसिंह परमार, विजय शाह, विश्वास सारंग व प्रद्युम्नसिंह तोमर शामिल है।

पूर्व सीएम शिवराजसिंह चौहान ने दी शुभकामनाएं...

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्री पद की शपथ लेने वाले विधायकों को शुभकामनाएं दी है। शिवराजसिंह ने कहा कि मैं आज शपथ ले रहे सभी मंत्री मित्रों को, कैबिनेट मंत्री, स्वतंत्र प्रभार के मंत्री, राज्य मंत्री सबको हृदय से बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। वे अपनी संपूर्ण क्षमताओं के साथ पूरी निष्ठा व लगन से प्रदेश की जनता की सेवा का एक नया इतिहास रचेंगे।

हर वर्ग का रखा गया है ध्यान...

मोहन सरकार में हर वर्ग का ध्यान रखा गया है। 28 मंत्रियों में 7 सामान्य वर्ग, 11 ओबीसी वर्ग से, 6 एससी वर्ग से और 4 एसटी वर्ग से हैं।

नवविवाहिता ने लगाई फांसी, मौत

मनासा, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। समीपस्थ रामपुरा तहसील की ग्राम पंचायत देवरान के छोटे से गांव देवरान मजरा में अज्ञात कारणों के चलते एक गर्भवती नव विवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना रविवार रात की है, उस वक्त महिला घर में अकेली थी। तब महिला ने अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

घटना की जानकारी मिलते ही सुबह पुलिस द्वारा पंचनामा बनाकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मनासा के सरकारी अस्पताल भेजा गया। जहां उसके शव का परिजनों की मौजूदगी में पोस्टमॉर्टम किया गया। बताया जा रहा है कि महिला करीब 5 माह की गर्भवती थी। मृतक महिला रेणु पति बबलू मेघवाल ने घर की छत पर पंखे से साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फिलहाल पुलिस ने इस मामले में मर्ग कायम कर हर पहलू से जान शुरू कर दी है।

सड़क पर दौड़ी नीलगाय, कार पलटने से एक घायल

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। अफजलपुर थाना क्षेत्र के ग्राम झिरकन में एक कार पलट गई। जिसमें सवार एक व्यक्ति घायल हो गया।

मिली जानकारी के अनुसार रविवार रात कार क्रमांक एमपी 14 सीडी 3330 के सामने अचानक नीलगाय आ गई। जिससे कार अनियंत्रित होकर सड़क से उतर कर पलट गई। इससे कार चालक घायल हो गया। उसे इसके बाद घायल को धुंधडक़ा अस्पताल ले जाया गया।

बहु ने सास पर लगाया जहर पिलाने का आरोप

पुलिस ने दर्ज किया हत्या के प्रयास का मामला

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सीतामऊ के अरगड़ा बस्ती की रहने वाली विवाहित महिला ने सास पर जबरन जहर पिलाने और जान से मारने की कोशिश का आरोप लगाया है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने सास के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

सीतामऊ पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार शबाना पति अजहर हुसैन शेख 20 वर्ष ने शिकायत दर्ज करवाई की उसका निकाह दो वर्ष पहले जहीर पिता जाकीर हुसैन शेख से हुआ था। शादी के बाद से ही सास मुशरफ बी उसके साथ झगड़ा करने लगी थी। 23 दिसंबर को जब पति, ससुर और देवर घर से बाहर गए थे। तब सास ने फिर झगड़ा शुरू किया। इस पर दोनों के बीच बहस हुई थी। इसी बीच सास मुशरफबी ने उसे जबरन पकडक़र घर में रखी चूहे मारने वाली दवाई का पाउडर मुंह में डाल दिया। उसने किसी तरह अपने पिता अय्यूब खां को फोन पर इसकी जानकारी दी। पिता ने उसे अस्पताल भर्ती करवाया। पीड़िता ने आरोप लगाया की जब पिता उसे लेने पहुंचे तब सास ने उसके बेटे मजहर को अपने पास ही रख लिया और उसकी हत्या की धमकी देते हुए जहर वाली बात किसी को नहीं बताने पर धमकाया था। उपचार के बाद सास ने समझौता करते हुए आगे से झगड़ा नहीं करने की बात कर माफी मांगी। अगले ही दिन सास ने फिर झगड़ा शुरू कर दिया और गैस सिलेंडर खोलकर आग लगाकर मारने की कोशिश की। इसके बाद वह घबराकर अपने अपने पिता के पास चली गई। पीड़िता ने पुलिस को अस्पताल के दस्तावेज दिखाते हुए सास मुशरफ बी के खिलाफ जान से मारने की कोशिश की शिकायत दर्ज कराई। मामले में पुलिस ने सास से खिलाफ धारा 307 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

सप्तम पुण्य स्मरण

भक्ति आपने की... पुण्य हमें दिया
संघर्ष आपने किया... सुख हमें दिया
कर्म आपने किए... फल हमें दिया
देना ही आपके जीवन का मूल मंत्र था।।

पोरवाल समाज के वरिष्ठ, भाजपा के वरिष्ठ नेता, संघ निष्ठ, हमारे परम पूज्यनीय

स्व. सेठ श्री पूरनमलजी धनोतिया

की सप्तम (7वीं) पुण्यतिथि पर

शत्-शत् नमन

प्रभु मिलन - 26.12.2016

श्रद्धानवत

✲ पुत्र - विनोदकुमार, राजेन्द्रकुमार, अशोककुमार, महेश कुमार, संजय कुमार
✲ पौत्र-लोकेन्द्र, हरिश, राहुल, पलक, पलाश, आनंद, सक्षम, भव्य ✲ प्रपौत्र-लक्ष्य

********** फर्म **********

✲ जगन्नाथ मोतीलाल धनोतिया, फोन नं.-220041 ✲ धनोतिया ज्वेलर्स, फोन नं.-220841 ✲ धनोतिया ऑटो मोबाईल, मो.-9424042540 ✲ पोरवाल मोटर्स, मो.-9424035656 ✲ पोरवाल पेपर उद्योग, मो.-9425977930 ✲ धनोतिया वेयर हाउस, सुवासरा ✲ पूर्णायू वेयर हाउस, घसोई

शुभेच्छु - **पोरवाल मोटर्स**, हास्पिटल रोड, सुवासरा

कोहरे के साथ हुई सोमवार की सुबह

साल के अंत और नए साल की शुरुआत पर बारिश की संभावना

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सोमवार सुबह अंचल में घना कोहरा छाया रहा। इससे विजिबलिटी काफी कम रह गई। पश्चिमी विक्षोभ कमजोर होने से ठंड का असर बढ़ा है। न्यूनतम तापमान 11 डिग्री और अधिकतम तापमान 24 डिग्री के आसपास बना हुआ है।

मौसम जानकारों के अनुसार अगले एक दो दिन ऐसा ही मौसम बना रहेगा। नए साल की शुरुआत बारिश के साथ हो सकती है। ऐसा साल के अंत में सक्रिय हो रहे पश्चिमी विक्षोभ के कारण होगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ वेद प्रकाश सिंह ने बताया कि 29 से 30 दिसंबर के आसपास एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। इसके काफी स्ट्रॉन्ग होने का अनुमान है।

कोहरे के कारण प्रदेश में वंदे भारत, शताब्दी एक्सप्रेस, पंजाब मेल, मेवाड़ एक्सप्रेस सहित कई ट्रेनें लेट चली। पहाड़ों से टकराकर आने वाली उत्तरीय शुष्क हवा और पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव खत्म होने से सर्दी फिर बढ़ गई। मौसम वैज्ञानिक एके शुक्ला ने बताया कि कोहरे का असर अभी दो से तीन दिन तक बना रहेगा। इस कारण ठंड का असर भी कम नहीं होगा। इस बीच पश्चिमी विक्षोभ दोबारा सक्रिय होने वाला है। मौसम विभाग का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ के फिर सक्रिय होने से दो दिनों तक बरसात होने का अनुमान है।

मौसम विज्ञानियों के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ 29 से 30 दिसंबर के आसपास सक्रिय होगा। मौसम विभाग ने इसके कारण प्रदेश में दो दिनों तक बरसात का अलर्ट जारी किया है। प्रदेश के उत्तरी और पश्चिमी इलाकों में बरसात होने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार ग्वालियर चंबल संभाग और उज्जैन संभाग पर सबसे ज्यादा असर होगा। इन इलाकों में दो दिनों तक हल्की या मध्यम बरसात की संभावना है। साल 2023 के अंतिम दिन यानि 31 दिसंबर को और नए साल के पहले दिन यानि 1 जनवरी को खासतौर पर राज्य के उत्तरी पश्चिमी इलाके भीग सकते हैं।

विचार-मंथन

नई रणनीति पर काम करने की जरूरत

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में हुए आतंकी हमले में सेना के चार जवानों की शहादत और तीन के घायल होने की घटना से एक बार फिर यही रेखांकित हुआ है कि सख्ती के तमाम दावों के बावजूद आतंकवादियों को पूरी तरह रोक पाने में कामयाबी नहीं मिल पा रही है। इससे इतर ऐसे हमलों में एक नई प्रवृत्ति यह भी देखने में आ रही है कि आतंकी अब मुख्य रूप से सेना और अर्धसैनिक बलों को निशाना बना रहे हैं। जाहिर है, जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद ने नए सिरे से एक जटिल शक्ल अख्तियार कर ली है और यह गहरी चिंता का विषय है। गौरतलब है कि आतंकियों ने घात लगा कर सेना के दो वाहनों पर हमला किया, जो जवानों को लेकर सुरनकोट और बफलियाज जा रहे थे। वहां सुरक्षाबलों ने एक खुफिया सूचना के आधार पर आतंकियों के खिलाफ घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया था। हालांकि इस दौरान सेना के जवानों की ओर से भी मजबूती से जवाब दिया गया, मगर इस मुठभेड़ में चार जवान शहीद हो गए और तीन अन्य घायल हो गए। यह सही है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद पर काबू पाने के लिए अनेक सख्त कदम उठाए गए, इसका असर भी देखने में आया कि आतंकी संगठनों की सक्रिय गतिविधियों कमी आई। मगर यह भी तथ्य है कि इस बीच आतंकी हमलों की प्रकृति में बदलाव देखा गया और निशाने पर सार्वजनिक स्थान और आम लोगों के बजाय अब सेना और अर्धसैनिक बलों के जवानों को रखा जाने लगा है। कहा जा सकता है कि सरकार की ओर से आतंकी संगठनों की गतिविधियों की पहले की प्रवृत्ति के मद्देनजर जो रणनीति बनाई गई थी और उसकी वजह से अनेक आतंकवादियों को मार गिराने और आतंकी वारदात पर काबू पाने में कामयाबी मिलने लगी थी, शायद उसे ही देखते हुए आतंकी संगठनों ने अब ऐसे हमलों के लिए अलग तौर-तरीके अपनाने शुरू किए हैं। साफ है कि इस नई चुनौती का सामना करने के लिए उस क्षेत्र में पसरे आतंकवाद के खिलाफ उसी के मुताबिक सेना और अर्धसैनिक बलों को भी नई रणनीति पर काम करने की जरूरत है। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से ऐसी कई घटनाओं की तरह पुंछ में हुए ताजा हमले की भी जिम्मेदारी लश्करे-तैयबा की एक शाखा पीपुल्स एंटी-फासिस्ट फ्रंट यानी पीएएफएफ ने ली है। आतंकवाद के दायरे में इस नए चेहरे को भारतीय सुरक्षा बलों पर हमला, अपने संगठन में भर्ती के लिए युवाओं को कट्टरपंथी बनाने और उन्हें हथियार चलाने का प्रशिक्षण देने के लिए भी जाना जाता है। जाहिर है कि आतंकवाद का सामना करने के लिए सरकार की कोशिशों के बरक्स आतंकी संगठनों ने भी अपने तरीके में बदलाव किया है और इसी मुताबिक सेना या अर्धसैनिक बलों को भी सभी संभव विकल्प आजमाने के साथ-साथ सबसे ज्यादा ध्यान अपने खुफिया तंत्र पर देने की जरूरत है। पाकिस्तान स्थित ठिकानों से संचालित होने वाले ऐसे आतंकवादी संगठन आमतौर पर अपने हमलों को अंजाम देने के लिए स्थानीय आबादी का सहारा लेते हैं। इसलिए इसी मुताबिक सेना और सुरक्षा बलों को अपने अभियान को जारी रखना होगा। हालांकि अपने दायरे में सेना या अर्धसैनिक बलों की ओर से कोई कमी नहीं की जाती है, मगर पुंछ में हुए हमले में जवानों की शहादत और पीएएफएफ की ओर से इसकी जिम्मेदारी लेने की घटना ने आतंकवादियों से निपटने के लिए नई रणनीति की जरूरत रेखांकित की है।

अब दंड के बजाय न्याय पर ज्यादा जोर

(हरबंश दीक्षित, विधि विशेषज्ञ)

कानूनों में सुधार समय की मांग है और देश इस राह पर तेजी से बढ़ रहा है। संसदीय समिति की अनुशंसा के बाद ही आपराधिक कानूनों में व्यापक सुधार की पीठिका तैयार हो गई थी और अब भारतीय दंड संहिता 1860, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 तथा मूलत- 1878 में तैयार की गई दंड प्रक्रिया संहिता की जगह नए कानूनों को 20 दिसंबर को लोकसभा की मंजूरी मिल गई है। देश के आम लोगों की नजर से भी यह खुशी की बात है। राज्यसभा से पारित होने तथा राष्ट्रपति की सहमति के बाद ये पुराने कानूनों की जगह ले लेंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि भारतीय दंड संहिता को अब भारतीय न्याय संहिता कहा जाएगा। मंशा यह है कि दंडित करने के बजाय लोगों को न्याय देने के प्रति हमारा ज्यादा ध्यान होना चाहिए। साक्ष्य से जुड़े कानून में वैज्ञानिक पद्धतियों को सुसंगत बनाते हुए भारतीय साक्ष्य अधिनियम के नाम से नया कलेवर दिया गया है। आम नागरिक की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए दंड प्रक्रिया संहिता में व्यापक सुधार के बाद नए कानून का नाम भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता होगा। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य आम लोगों को न्याय मुहैया कराना है। चूंकि फौजदारी कानून जनता के मन में न्याय बोध पैदा करने का सबसे सशक्त माध्यम है, इसलिए सरकार की जिम्मेदारी है कि जरूरत के मुताबिक, उसमें सुधार करे। इनमें संशोधन के सुझाव तो पहले भी आए थे, किंतु मूर्त रूप नहीं ले सके थे। मसलन, सन् 1971 में विधि आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इनमें व्यापक सुधारों का प्रस्ताव किया था। उनके लिए सन् 1972 तथा उसके बाद 1978 में विधेयक भी पेश किया गया था, किंतु दोनों बार लोकसभा के भंग हो जाने से वह स्वत- समाप्त हो गया। फिर 2003 में मलिमथ समिति ने भी कुछ सुधारों का प्रस्ताव किया था। उसमें से कुछ को कानून बनाकर जोड़ा भी गया, किंतु वह पैबंद के रूप में ही रहा। नए कानूनों को न्याय की दिशा में बहुत बड़ी पहल के रूप में देखा जा रहा है। आम आदमी की पहली मांग यही होती है कि पुलिस या कोई दूसरी एजेंसी उसको बेजा परेशान न करे और दूसरी यह कि उसे समय से न्याय मिल जाए। इन विधेयकों में इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पहले से बेहतर व्यवस्था की गई है। पुलिस की मनमानी रोकने के लिए पर्याप्त उपाय किए गए हैं तथा अदालतों में भी सुनवाई व विचार के लिए समयबद्ध कार्यक्रम तय कर दिया गया है। आम लोगों की सबसे बड़ी शिकायत थाने में एफआईआर दर्ज करने और पुलिस के रवैये को लेकर रहती है। इसे सुधारने का प्रयास किया गया है। संज्ञेय अपराधों की सूचना अब मौखिक, लिखित या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से दी जा सकेगी। थाने में इसे दर्ज किया जाएगा, जिस पर सूचना देने वाले व्यक्ति को तीन दिन के अंदर हस्ताक्षर करना होगा। इसका मतलब यह हुआ कि गिरफ्तारी के मामलों में पुलिस की मनमानी से निजात मिलेगी। रिपोर्ट दर्ज करने में होने वाली हीला-हवाली दूर करने के लिए भी यह व्यवस्था की गई है। अब कहीं से भी ई-मेल से किसी अपराध की सूचना किसी थाने में दर्ज कराई जा सकेगी। महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के मामले में यह साफ तौर पर कहा गया है कि पीड़िता के बयान को केवल महिला अधिकारी द्वारा ही दर्ज किया जाएगा। आम आदमी की दूसरी शिकायत पुलिस के व्यवहार को लेकर रहती है। बगैर लिखा-पढ़ी लोगों को थाने में बैठा लेने और उनके निकट संबंधियों को जानकारी नहीं देने तथा उनके साथ मानवीय व्यवहार न करने की शिकायतें आम हैं। अब गिरफ्तार करने वाले पुलिस अधिकारी का नाम, उसकी पहचान तथा उसका नंबर उसकी वर्दी पर ऐसी जगह लिखा होना चाहिए, जहां उसे आसानी से पढ़ा और देखा जा सके। गिरफ्तारी के समय एक अभिलेख तैयार किया जाएगा, जिसे मौजूद गवाहों द्वारा सत्यापित किया जाएगा। गवाहों में कम से कम एक व्यक्ति गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्ति के घर का सदस्य या मित्र या समाज का कोई सम्मानित व्यक्ति अवश्य होना चाहिए। यदि ऐसा कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं है, तो गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्ति द्वारा उस व्यक्ति का नाम दिया जा सकेगा, जिसे उसकी गिरफ्तारी की सूचना दी जानी हो। गिरफ्तार व्यक्ति को पूछताछ के दौरान अपने वकीलों से भी मिलने का अधिकार होगा। अब तीन वर्ष से कम सजा वाले मामलों में गिरफ्तारी से पहले वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की अनुमति लेनी होगी तथा तीन से सात वर्षों तक की सजा वाले अपराधों में भी अभियुक्त को गिरफ्तार करने से पहले प्रारंभिक जांच से यह सुनिश्चित करना जरूरी होगा कि अपराध किया गया है। अदालतों में होने वाली देरी को कम करने के लिए भी इस विधेयक में पुलिस व अदालतों के लिए समय-सीमा तय कर दी गई है। अब पुलिस के पास किसी भी मामले की जांच के लिए अधिकतम 180 दिनों का समय होगा। उसके बाद अदालत को 60 दिनों का समय दिया गया है, जिसमें अभियोग तय करने की कार्यवाही की प्रक्रिया पूरी करनी होगी। सुनवाई पूरी होने के बाद अदालत को 30 दिन के अंदर ही फैसला देना होगा, जिसे सात दिनों के अंदर ऑनलाइन उपलब्ध कराना होगा। लोक सेवकों से जुड़े अपराध के मामले में जहां मुकदमा चलाने के लिए विभागीय अनुमति की जरूरत है, वहां निर्णय लेने वाले अधिकारी को 120 दिनों के अंदर ही उस पर निर्णय लेना होगा, यदि इस समय-सीमा में कोई निर्णय नहीं लिया जाता है, तो इसके बाद यह मान लिया जाएगा कि अनुमति दे दी गई है और मुकदमा चलाया जा सकता है। वैसे दुष्कर्म व महिलाओं के विरुद्ध होने वाले कुछ अपराधों तथा मानव तस्करी जैसे मामलों में किसी प्रकार की अनुमति की जरूरत नहीं होगी। सजा के मामले में भी एक ऐतिहासिक पहल की गई है। सामुदायिक सेवा को भी कुछ मामलों में सजा के रूप में मान्यता दी गई है। इससे भावावेश में अपराध करने वाले लोगों को पश्चाताप और मुख्यधारा में ही बने रहने का विकल्प उपलब्ध रहेगा। मतलब, देश अब सकारात्मक सजा की ओर बढ़ चला है। कानून के इन अच्छे प्रावधानों का लाभ आम लोगों तक पहुंचाने के लिए पूरी ईमानदारी और उदारता की जरूरत पड़ेगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

घरेलू हिंसा में 'मर्दों का दर्द'....

-राजेन्द्र मोहन शर्मा

हमारे समाज में महिलाओं के विरुद्ध कई प्रकार की हिंसाएं होती रही हैं जिनमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक या फिर यौन शोषण मुख्य रूप से विद्यमान रही हैं। इन सभी प्रकार की हिंसाओं को रोकने के लिए समय-समय पर कई प्रकार के कानून भी बनाए गए हैं। इसी तरह वर्ष 2005 में घरेलू हिंसा के विरुद्ध महिला संरक्षण एक्ट बनाया गया। पुरुष प्रधान समाज में देखा गया है कि पति अपनी पत्नी को कई प्रकार की यातनाएं देता आया है। कभी दहेज तो कभी दूसरी शादी कर लेना या फिर किसी अन्य औरत के साथ संबंध बना लेना जैसी घटनाएं आम तौर पर घटित होती रहती हैं। इसके अतिरिक्त बच्चा, विशेषत- लड़का पैदा न होने पर सारा दोष महिला पर ही मढ़ देना तथा छोटी-छोटी बातों पर ससुराल पक्ष की तरफ से कई प्रकार की यातनाएं देना आम-सी बात बन गई थी। इन सभी क्रूरताओं को दूर करने के लिए सख्त कानून बनाना पड़ा जोकि वास्तव में कई वर्ष पहले ही बना लेना चाहिए था। समाज में यदि किसी महिला के साथ हिंसा होती है तो दोषी के विरुद्ध सख्त व स्पष्ट कानून है तथा महिला की शिकायत पर भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए के अंतर्गत एफ.आई.आर. दर्ज हो सकती है मगर यह भी पाया गया कि इस कानून का दुरुपयोग किया जाने लगा है तथा पत्नी की शिकायत पर ससुराल वालों व अन्य सभी रिश्तेदारों को जेलों में रखा जाने लगा। वर्ष 2014 में अरनेश कुमार बनाम स्टेट ऑफ बिहार के केस में उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक निर्णय में धारा 498ए को जमानती अपराध बना दिया अन्यथा इस एक्ट का दुरुपयोग बढ़ता ही जा रहा था। दूसरी तरफ कई परिस्थितियों में मर्दों/पुरुषों का दर्द भी बढ़ता गया तथा वह भी हिंसा के शिकार होने लगे। विधि-वेत्ताओं ने भी शायद यह कभी नहीं सोचा कि पुरुषों के साथ होने वाली ह्यूहसा के विरुद्ध भी कोई कानून बनाया जाए। हर मां-बाप जिन्होंने अपने बेटे की हर प्रकार से परवरिश की होती है, की चाह होती है कि उनका बेटा उनके बुढ़ापे का सहारा बने मगर न जाने बेटे किन कारणों से अपने माता-पिता के उपकार को भुला कर उन्हें नकारना शुरू कर देते हैं। प्रत्येक बेटा अपने मां-बाप की सही देखभाल करना चाहता है मगर शादी के बाद वह न जाने किन मजबूरियों के कारण अपने मां-बाप को ठुकराना शुरू कर देता है। ऐसा नहीं है कि वह ऐसा व्यवहार करने से खुश रहता होगा मगर हालात उसे तनावग्रस्त जरूर बना देते हैं। वह अपने दर्द को किसी से कह नहीं पाता तथा कई बार तो वह आत्महत्या करने के लिए भी मजबूर हो जाता है। उदाहरण के तौर पर हाल ही में दिल्ली के एक थाना में मामला दर्ज हुआ जिसमें पुरुष ने बतलाया कि उसकी पत्नी अपना घर बेचकर उस पर दूसरी जगह खरीदने का दबाव बना रही थी तथा जब उसने इंकार कर दिया तो पत्नी ने उसका कान काट दिया। हमारे समाज की धारणा है कि पुरुष ही घरेलू ह्यूहसा करते हैं मगर आंकड़े मर्द के दर्द की एक अलग ही कहानी बयां करते हैं। नैशनल हैल्थ फैमिली सर्वे ने जब 18 से 49 वर्ष की शादीशुदा महिलाओं से सवाल पूछा कि वे अपने पति से मारपीट करती हैं तो 4 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि वह अपने पति से मारपीट करती हैं। यही सवाल यदि पुरुषों से पूछा जाए तो आंकड़ा कहीं बड़ा होगा। हमारे समाज में पहले से ही धारणा बनी हुई है कि मर्द को दर्द नहीं होता तथा असली मर्द रोते नहीं हैं। यदि कोई मर्द किन्हीं कारणों से तनाव में है तो लोग कहते हैं कि यह मर्द बहुत कमजोर है तथा उसे यही कहा जाता है कि वह मर्द बनना सीखे। ऐसे मर्दों के मन की तकलीफ की समाज में कहीं चर्चा नहीं होती। पुरुष बनना भी कोई आसान नहीं है। एक अनुमान के अनुसार 73 प्रतिशत आत्महत्याओं के मामले पुरुषों के ही होते हैं तथा अधिकतर मामलों में इसका बड़ा कारण पारिवारिक ही होता है।आजकल कई तनावपूर्ण वैवाहिक स्थितियों के कारण पत्नी या उसके रिश्तेदार ससुराल वालों को ब्लैकमैल करने का साधन भी बना लेते हैं तथा इस तरह तलाक के मामलों में बढ़ोतरी होती जा रही है। उच्चतम न्यायालय ने तो पहले ही माना है कि धारा 498ए का दुरुपयोग हो रहा है। यह भी देखा गया है कि कुछ महिलाएं अपने ससुराल वालों को उचित सम्मान नहीं देतीं तथा पतियों को उनके माता पिता से अलग रहने पर मजबूर कर देती हैं। इसके अतिरिक्त पति पर बिना वजह के संदेह करते रहना तथा उसे अपने माता पिता के साथ ज्यादा बातचीत न करने देना इत्यादि कुछ ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से मर्द अपने दर्द को मन ही मन में रखता चला जाता है।

विश्व के इंटेलीजेंट प्राणियों में एक थे हमारे रामानुजन

आज अपनी कक्षा में जब मैंने बच्चों से पूछा कि दुनिया में वे किसे सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्राणी मानते हैं ? बच्चों के जवाब सुनकर मुझे खुशी की अनुभूति हुई क्योंकि कई बच्चों ने न्यूटन, चाणक्य, आइंस्टीन, एपीजे अब्दुल कलाम, के साथ साथ श्रीनिवास रामानुजन का भी नाम लिया। महान गणितज्ञ रामानुजन का जन्मदिन 22 दिसंबर को भारत में गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है। बच्चों द्वारा उनको अपना आदर्श व्यक्तित्व कहने पर मुझे लगा कि यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है उनके 136वें जन्मदिन के अवसर पर। रामानुजन जब केवल कक्षा पांच में पढ़ते थे, तो उनकी अध्यापिका ने कक्षा में पढ़ाया कि यदि हम किसी संख्या को उसी संख्या से भाग देते हैं, तो फल हमेशा एक आता है। छोटे बच्चे, जो अध्यापक की हर बात को जी हां कहकर स्वीकारते हैं, और आज से सौ साल पहले तो मास्टर ही ज्ञान का पुंज होता था, उस वक्त भी जीनियस रामानुजन ने अपनी अध्यापिका से क्रॉस प्रश्न पूछा- यदि शून्य को शून्य से भाग करते हैं, तो क्या होगा? क्या भागफल एक ही आएगा? उनकी अध्यापिका ने कहा, 'क्यों नहीं, एक ही तो आएगा।' उनका प्रश्न बहुत ही गूढ़ था, क्योंकि शून्य भी तो एक संख्या ही है। कुछ नहीं को कुछ नहीं में बांटने से एक कैसे आ सकता है? यही सोचते रहे और आज के इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जमाने में भी यह एक अजूबा है और शून्य भागा शून्य को इंडेटरमिनेट फॉर्म कहा जाता है। श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर,1887 में इरोड, तमिल नाडु में हुआ था। महज 33 साल कि उम्र में टीबी की बीमारी के कारण 26 अप्रैल, 1920 में चेन्नई में इनकी मृत्यु हो गयी थी। इस छोटे से जीवनकाल में रामानुजन ने गणित के विकास में जो योगदान दिया वह अतुलनीय हैं। वह गणित के जादूगर ही थे , नंबर तो मानो उनकी हर सांस में निकलते थे या फिर रगों में दौड़ते थे। इन्होंने खुद से गणित सीखा और इतने विलक्षण क्षमता के थे कि मात्र 12 साल की उम्र में ट्रिगोनोमेट्री में महारथ हासिल कर ली थी। रामानुजन को गणित सिद्धांतों पर काम करने के कारण 'लंदन मैथमेटिक्स सोसाइटी में चुना गया था। रामानुजन जैसे महान गणितज्ञ पर फिल्म भी बन चुकी है । 2015 में द मैन हू न्यू इनफिनिटी फिल्म काफी चर्चित डॉक्यूमेंट्री मूवी रही। इंफाइनाइट सीरीज, इंफाइनाइट फंक्शन, नंबर थ्योरी और मैथमेटिकल एनालिसिस में श्रीनिवास रामानुजन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे गणित को खेल समझकर संख्याओं से खेलते रहते थे। मैजिक वर्ग बनाना उनका पसंदीदा शौक था। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एच डी हार्डी रामानुजन की अनूठी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुवे और उन्होंने रामानुजन को कैंब्रिज बुलाया तथा उन्हें प्रसिद्ध रॉयल फेलोशिप भी दिलाई। किसी भी शिष्य को उभारने में एक गुरु कि भूमिका होती हैं। रामानुजन जीनियस तो थे ही फिर भी रामानुजन को मौका देने वालों में प्रोफ हार्डी का विशेष योगदान रहा। इन दोनों ने 50 से ज्यादा रिसर्च पेपर्स मिलकर लिखे। इनके जीवन की एक रोचक घटना से रामानुजन के नंबरों के जादूगर होने की बात चरितार्थ होती हैं। रामानुजन जब कैंब्रिज में बीमार होकर एक अस्पताल में भर्ती थे तो इनको मिलने प्रोफ हार्डी आए। अस्पताल आते ही वह बोले आज की टैक्सी जिसका नंबर था 1729, बहुत ही बदनसीब निकली जिसके कारण आने में बहुत ही परेशानी हुई। रामानुजन तुरंत बोले यह नंबर तो बहुत ही रोचक हैं। यही सबसे छोटा नंबर हैं जिसको दो नम्बरों के घनों के जोड़ के साथ लिख सकते हैं।

आज का राशिफल

मेष: [illegible]

वृषभ: [illegible]

मिथुन: [illegible]

कर्क: [illegible]

सिंह: [illegible]

कन्या: [illegible]

तुला: [illegible]

वृश्चिक: [illegible]

धनु: [illegible]

मकर: [illegible]

कुंभ: [illegible]

मीन: [illegible]

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5096

			2	4		6		
9								3
1					3		4	5
5	6			7		1		
		4	8		5	9		
		1		6			5	2
6	9		5					1
4								9
		8		9	6			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5095

4	1	6	9	2	3	5	8	7
5	8	2	4	1	7	6	9	3
3	9	7	6	8	5	4	1	2
7	3	9	1	6	4	2	5	8
1	5	8	3	7	2	9	4	6
6	2	4	8	5	9	7	3	1
9	7	3	2	4	1	8	6	5
2	6	1	5	9	8	3	7	4
8	4	5	7	3	6	1	2	9

वर्ग पहेली 5096

संकेत: बाएं से दाएं

1. 19 जून को कांग्रेस के वर्तमान राजनीतिज्ञ का जन्मदिवस है (5)
5. संबंध से, हेतु, वास्ते (2)
7. दार्शनिक प्रणाली, राय, जोर (2)
8. धारण करने वाला, वेशधारी (3)
9. रोगी, जिसे कोई मर्ज हो (3)
10. रस्म, प्रथा, रीति (3)
11. शुभता, लाभकारिता, अप्रत्याशित कल्याण (3)
14. पीला, पका-भुना हुआ (2)
15. झिलमिलाहट, झुलस (3)
16. कुशल, लायक, निपुण (3)
18. महसूल, टैक्स, हक, दाम (2)
19. प्रणाम करता हुआ, अवनमित, झुका हुआ (2)
20. नियम पालन, निष्ठा निर्वाह (3)
21. फलदायक, फल देनेवाला, फलद, सुफल (3)

ऊपर से नीचे

1. संत तुलसीदास की प्रसिद्ध पौराणिक कृति (8)
2. आहुति के रूप में दिया हुआ (2)
3. यह गांधार देशाधिपति सुबल की पुत्री थी शकुनि इनके भाई थे (3)
4. धैर्य, धीरज (3)
6. तीक्ष्ण, कठोरकर्म, गहन प्रभावी (2)
9. विवश, लाचार, इस नाम की दो फिल्मों के नायक क्रमश: विश्वजीत (1965) व अमिताभ बच्चन (1974) थे (4)
11. जो नजरों से ओझल कर कैद किया गया हो, नजरबंद (5)
12. क्रय-विक्रय की वस्तु, सुस्वादु भोजन, अन्नपान, स्वादिष्ट आहार (2)
13. ये सिख संप्रदाय के आदि गुरु थे (3)
17. भलाई, उपकार, कल्याण, अंतर्दृष्टि (2)
18. कपालास्थि कटोरा, खप्पर, खोपड़ा, संपूर्ण खोपड़ी (3)

वर्ग पहेली 5095 का हल

पि	ती		भ	र	त	पु	र
त	ना		ला	भ		का	ज
	सं	धा		ना	डि	र	
अ	दा	व	त		ल		ठ
	व	ते	न		ज	मी	का
की	र		ब	द	ला	ना	
म	का	स	द				री
	र	वा	न	गी		सौ	म

भागवत कथा शुभारंभ अवसर पर पोथी यात्रा निकली

पं. दशरथभाईजी के मुखारविंद से श्रीमद् भागवत कथा में बह रही है ज्ञान की गंगा

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। परम पूज्य श्री दशरथभाईजी के मुखारविंद से मंदसौर के माहेश्वरी धर्मशाला में सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा की जा रही है। शांतिलाल स्व. श्री नानालालजी एकलिंग सोनी (कुलथिया) परिवार के द्वारा पितृजनों की पावन स्मृति में यह भागवत कथा कराई जा रही है। दिनांक 25 जनवरी से प्रारंभ हुई श्रीमद् भागवत कथा 31 जनवरी रविवार तक आयोजित होगी। जिसमें प्रतिदिन दोप. 1 से सायं 5 बजे तक विद्वान पं. दशरथभाईजी श्रीमद् भागवत कथा श्रवण करा रहे है।

श्रीमद् भागवत कथा के शुभारंभ अवसर पर कल सोमवार को स्वर्णकार समाज व नगर के गणमान्य नागरिकों व माता बहनों की गरिमामयी उपस्थिति में भव्य पोथी यात्रा निकाली गई। स्वर्णकार समाज की आराध्यदेवी मॉ लालबाई फूलबाई मंदिर शहर किला रोड से यह पोथी यात्रा प्रारंभ हुई। यहां भागवत पौथी का पूजन पं. दशरथभाईजी के द्वारा कराया गया। सर्वप्रथम भागवत पौथी शांतिलाल सोनी व श्रीमती धापुबाई सोनी ने अपने सिर पर धारण की। इसके बाद पौथी यात्रा शहर किला रोड, सराफा बाजार, मण्डी गेट, सदर बाजार, कालाखेत होते हुए नयापुरा रोड, स्थित माहेश्वरी धर्मशाला पहुंची। बेंडबाजे के साथ प्रारंभ हुई इस पोथी यात्रा में कथाकार पं. दशरथभाईजी विशेष रूप से शामिल हुये। कथा आयोजक परिवार के शांतिलाल सोनी व धापूबाई सोनी को बग्गी पर बिठाया गया। इस अवसर पर पं. दशरथभाईजी को भी बग्गी पर विराजित किया गया। इस पौथी यात्रा में महिलाएं विशेष प्रकार की चुनरी साडी में व पुरूष श्वेत वस्त्रों को पहनकर शमिल हुए। माता बहनों ने पोथी यात्रा के मार्ग में कई स्थानों पर कथा प्रारंभ होने की प्रसन्नता में नृत्य भी किया। इस पोथी यात्रा का कनक घी चौराहा, सदर बाजार एवं सराफा बाजार में पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत भी किया गया। पोथी यात्रा में नगर के कई गणमान्य नागरिकगण भी शामिल हुए और उन्होंने पं. दशरथभाईजी से आशीर्वाद भी प्राप्त किया और कथा आयोजक परिवार को शुभकामनाएं दी।

पौथी यात्रा केउपरांत दोपहर में कथा श्रवण कराते हुए पं. दशरथभाईजी ने कहा कि श्रीमद् भागवत मनुष्य को भगवान की भक्ति से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। इसमें श्री कृष्ण केवाम्मय स्वरूप का जो चित्रण किया गया है जो भी उसे श्रवण करता है वह मोक्ष मार्ग की और प्रवृत्त होता है। भागवतजी जीवन जीने की कला और सांसारिक मोह बंधनों से मुक्ति का मार्ग बताती है। श्रीमद भागवत हमें मृत्यु से भयमुक्त होने का संदेश देती है। कथा आयोजन करकेशांतिलालजी नानालालजी एकलिंगजी परिवार ने सभी को धर्म से जुडने की जो प्रेरणा दी है वह अद्भूत है।

गीता जयंती समारोह का शुभारंभ शाहपुरा पीठाधीश्वर स्वामी रामदयालजी करेंगे...

पांच दिवसीय गीता जयंती एवं 48वां नेत्र शिविर लगेगा

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। धर्मधाम गीता भवन ट्रस्ट द्वारा इस बाद पांच दिवसीय 51वीं गीता जयंती एवं 48वां गीता नेत्र शिविर 7 जनवरी 2024 से 11 जनवरी 2024 तक मनाया जाएगा। इस संदर्भ में गीता भवन में गीता भवन ट्रस्ट के संस्थापक एवं अध्यक्ष स्वामी श्री रामनिवासजी महाराज की अध्यक्षता में सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर स्वामी श्री रामनिवासजी ने बताया कि पांच दिवसीय गीता जयंती का शुभारंभ प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शाहपुरा पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामदयालजी महाराज करेंगे। जिला चिकित्सालय के माध्यम से 48वां नेत्र शिविर का आयोजन भी इसी दिन होगा। नेत्र रोगियों की जांच के बाद ऑपरेशन होंगे। गीता ज्ञान प्रवचन प्रतिदिन 1 बजे से सायं 5 बजे के बीच होगा। स अवसर पर व्यवस्था संबंधी विभिन्न समितियों का गठन किया गया। संत सेवा व बाहर से पधारने वालों को भोजन व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा की जाएगी। यज्ञ व भोजन प्रसादी में सर्वश्री सूरजमल गर्ग, भगवानदास विजयवर्गीय, राजेन्द्र अखावत, युधिष्ठिर अखावत, प्रेम रत्नावत, प्रवीण गुप्ता, पुष्पा पाटीदार एवं सुभाष अग्रवाल ने सहयोग देने की घोषणा की। इस अवसर पर गीता भवन के उपाध्यक्ष जगदीश चौधरी, ट्रस्टी बंशीलाल टांक, सूरजमल गर्ग चाचाजी, ज्योतिषज्ञ दीदी लाडकुंवर ने संबोधित किया। गीता भवन ट्रस्ट के सचिव पं. अशोक त्रिपाठी ने 51वें गीता जयंती महोत्सव एवं 48वें नेत्र शिविर के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर गीता भवन ट्रस्ट के ट्रस्टीगण सर्वश्री जगदीश चौधरी, अशोक त्रिपाठी, शेषनारायण माली, बंशीलाल टांक, विनोद चौबे के अलावा गीता भवन परिवार के सर्वश्री सूरजमल गर्ग (चाचाजी), सुभाष अग्रवाल, जगदीश काबरा, दीपक चौधरी, रजनीश पुरोहित, युधिष्ठिरसिंह अखावत, सत्यनारायण सोमानी, प्रेमकुमार पोरवाल (रत्नावत), पं. अभिषेक भट्ट पुजारी केअलावा गीता भवन महिला मण्डल परिवार की पुष्पा पाटीदार, विद्या राजेश उपाध्याय, अंजू तिवारी, पूजा बैरागी, रानू विजयवर्गीय, चन्द्रकांता पुराणिक, अनुपमा बैरागी, पुष्पा माली, अमृतबाला शुक्ला, पुष्पा गौड, अयोध्या बाई, विजयलक्ष्मी सांखला, नैना हडपावत, मिथलेशसिंह बापच्या, प्रियंकासिंह, अनामिकासिंह, मंजू राठौर, युधिष्ठिरसिंह, विनिता सिंह, मिथिलेश कंवरप्रियंका सिंह सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे। इसके पूर्व मोक्षदा एकादशी पर पं. हेमन्त भट्टद्वारा गीता का मूल पाठ किया तथा महाआरती हुई। संचालन अशोक त्रिपाठी ने किया तथा आभार बंशीलाल टांक ने माना।

गायत्री शक्तिपीठ पर नि:शुल्क योग प्रणायाम जारी

पिपलियामंडी, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। अखिल विश्व स्वास्थ्य आन्दोलन के तहत स्थानीय गायत्री परिवार की ओर से गायत्री शक्तिपीठ पर प्रतिदिन नि:शुल्क योग एवं प्राणायाम कराया जा रहा है। इसमें जैसा रोग वैसा योग, एक्यूप्रेशर आदि सुविधा है। प्रात: 7.30 से 8.30 बजे तक योग क्रियाएं कराई जा रही है। शामिल होने वाले लोगों के लिए अंकुरित अन्न व रसाहार की व्यवस्थ भी की जा रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी की जन्म जयंति मनाई

लूनाहेड़ा, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंति सुशासन दिवस के रुप मे मनाई गई। नगर अध्यक्ष कमलेश कुमावत ने सर्वप्रथम अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में चलाई गई जनकल्याणकारी योजनाओं व उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर महेश पाटीदार, नंदकिशोर पाटीदार, चंद्रकांत पाटीदार, गोपाल धनगर, प्रहलाद धनगर, प्रभुलाल धनगर, विष्णु मालवीय, विष्णु ब्राह्मण, महिपालसिंह सिसोदिया, प्रदीप शर्मा, सिकंदर जैन, भगत धनगर सहित भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

विश्व हिंदू परिषद ने किया अक्षत कलश का आयोजन

लूनाहेड़ा, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। विश्व हिंदू परिषद ने लूनाहेडा सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में रामलला प्राण प्रतिष्ठा निमित्त राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या से भेजे गए पुजीत अक्षत कलश का आयोजन किया गया। लूनाहेडा उपखण्ड के 20 गांवो के अक्षत कलश वितरित किए गए साथ ही कारसेवक अयोध्या गए जिनको दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि रामकथा प्रवक्ता सीता बहन, दिलीप चावडा, निलेश जैन सहित अतिथियों ने 22 जनवरी के कार्यक्रम को लेकर विस्तृत जानकारी दी। बाद में अक्षत कलश की गांव में फेरी निकाली गई।

जहां गंदगी होगी वहां अधिक बीमारी पैदा होगी

गायत्री परिवार ने कुबेर मंदिर में स्वच्छता का द्वितीय चरण चलाया

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। गायत्री परिवार द्वारा नगर के मंदिर परिसरों, बगीचों, बावडियों में सफाई अभियान का क्रम निरंतर जारी है। श्रमदानियों ने खिलचीपुरा स्थित भगवान कुबेर मंदिर में सफाई अभियान का द्वितीय चरण चलाया गया। जिसके तहत मंदिर के पीछे के भाग को साफ स्वच्छ कर श्रमदानियों द्वारा पौधारोपण भी किया गया। इस दौरान श्रमदानी हर्ष शर्मा ने कहा कि जहां गंदगी होगी वहां अधिक बीमारी पैदा होगी। बीमारियों से दूर रहना है कि हमें अपने घर के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों को साफ व स्वच्छ रखना होगा।

गायरी परिवार के श्रमदानी रमेश सोनी ने कहा कि हमने मंदिर के बगीचों की स्वच्छता का अभियान चला रखा है। अधिकांश स्थानों पर गंदगी मिल रही है। गायत्री परिवार के इस अभियान से जुड़कर इस अभियान को ओर गति प्रदान करे। आपने नगर के जागरूक नागरिकों से आव्हान किया कि सार्वजनिक स्थानों पर चलाये जा रहे स्वच्छता अभियान में सहभागिता प्रदान करें। जैसे अपने घरों में हम गंदगी नहीं करते है इस प्रकार सार्वजनिक स्थानों को साफ व स्वच्छ रखने का संकल्प ले। श्रमदान में सेवानिवृत्त कोषालय अधिकारी बी.एल. चौहान, योगेशसिंह, रमेश सोनी, नालछा माता मंदिर ट्रस्टी हर्ष शर्मा, रमेश सोनी, कादर मंसूरी एडवोकेट, कन्हैयालाल शर्मा, मांगीलाल लक्षकार, खिलचीपुरा के बालकों हरिओम करालिया, सूरज ठाकुर, आयुष ठाकुर, रोहित ठाकुर, हर्षित ठाकुर, बुरू ठाकुर, सिद्धार्थ ठाकुर ने श्रमदान में भाग लिया।

श्रीमद् भागवत मानव को भगवान से जोड़ने का सशक्त माध्यम है-पंकज कृष्ण महाराज

नीमच, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा मानव को भगवान से जोडने का सशक्त माध्यम है। श्री कृष्ण के जीवन चरित्र का वांग्मय स्वरूप है यह मुक्ति का मार्ग दिखाती है। जीवन जीने की कला सिखाती है। श्रीमद्भागवत ज्ञान दुख के साथ जीवन जीना सिखाती है। यह बात श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा में भागवताचार्य, श्री पंकज कृष्ण महाराज ने कही।वे स्पेंटा पेट्रोल पंप के पीछे इंदिरा नगर स्थित शनि मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हरि भजन के बिना सभी दु:खी रहते हैं इसलिए सदैव भजन सत्संग से जुडकर रहना चाहिए। कुछ लोग दुख में रहते हुए भी सुख का अनुभव करते हैं तो

उनसे सुख ज्यादा दूर नहीं रहता है मिलकर ही रहता है। मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है।एकाग्रता पूर्वक भगवत स्मरण करें तभी आत्मा का कल्याण हो सकता है।

भागवत श्रवण से जीवित मनुष्य तो क्या प्रेतात्मा का भी कल्याण हो जाता है और मुक्ति मिलती है। संसार के सभी सुखों से महत्वपूर्ण श्रीमद् भागवत सत्संग होता है। जीवन में कष्टें के बाद ही सच्चा सुख मिलता है भगवान का सेवक बन कर रहना चाहिए। जिसने क्रोध को जीत लिया। संसार के प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकता है। श्रीमद्भागवत श्रवण करने से अनेक कष्टें का संहार होता है। मन को शांति मिलती है।तनाव दूर होता है। महाराज श्री ने शिव अमर कथा, 24 अवतार का प्रसंग सहित विभिन्न विषयों के महत्व पर वर्तमान परिपेक्ष में प्रकाश डाला।श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा से 24से 30 दिसंबर तक प्रतिदिन दोपहर 1 से 4 बजे तक श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा प्रवाहित हो रही है। श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा का शुभारंभ शनि मंदिर में पूजा अर्चना के बाद मंगल कलश यात्रा के साथ हुआ अमृत कलश यात्रा इंदिरा नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए शनि मंदिर पहुंची।

इंटक का प्रादेशिक कार्यकारिणी अधिवेशन एवं बैठक ग्वालियर में संपन्न

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शनिवार 23 दिसम्बर को इंटक का 242 वां प्रादेशिक कार्यकारीणी अधिवेशन एवं बैठक ग्वालियर में संपन्न हुई। अधिवेशन को प्रदेश अध्यक्ष आरडी त्रिपाठी, ग्वालियर विधायक सतीश सिकरवार, युवा इंटक के प्रदेश अध्यक्ष मिथलेश तिवारी सहित प्रादेशिक पदाधिकारियों का सानिध्य प्राप्त हुआ। इस अधिवेशन में मंदसौर से जिलाध्यक्ष इंटक खूबचंद्र शर्मा, उपाध्यक्ष विक्रम विद्यार्थी, मप्र युवा इंटक सचिव सुनिल गुप्ता, युवा इंटक जिलाध्यक्ष मंदसौर सुरेन्द्र कुमावत, मयंक सोनी भी सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में सम्मिलित सभी मंदसौर के इंटक नेताओं ने मजदूरो की समस्याओं को प्रमुखता उठाया। इस अवसर पर मंदसौर युवा इंटक जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमावत ने कहा कि आज केन्द्र सरकार की श्रमिक विरोधी नितियों के कारण मजदूर वर्ग बेहद परेशान है। ठेकेदारी पद्धति से भी श्रमिका के अधिकारों का हनन हो रहा है। मध्यप्रदेश सरकार की श्रमिक योजनाओं का लाभ भी श्रमिकों को नहीं मिल रहा है जिसकी हमें पूरजोर तरीके से लडाई लडना है। आपने कहा कि हमारा प्रथम कर्तव्य मजदूरों की समस्याओं का त्वरित निराकरण करना है और मजदूरों के अधिकारों का हनन न हो इसका भी हमें विशेष ध्यान रखना होगा।

रामगोपाल राजा के अभा वाल्मीकि महासभा के कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर हर्ष की लहर

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सेवानिवृत अधिशाषी अधिकारी रामगोपाल राजा को अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा का कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया। देश के राज्यों के वरिष्ठ प्रमुख पदाधिकारियों से विचार विमर्श कर प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल राजा को वाल्मीकि महासभा का कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जिससे मंदसौर जिले सहित देशभर के वाल्मीकि समाज बन्धुओं में हर्ष की लहर है। अभा वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जीवन गोसर ने बताया कि वाल्मीकि महासभा के संगठनात्मक निर्णय लेने में उनका सहयोग करने और महासभा के मुख्य एजेंडे को गति देने, वर्तमान राजनीति को सामाजिक स्थिति की समीक्षा कर कार्य योजना बनाने के कार्य नवनियुक्ति कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष रामगोपाल राजा करेंगे। इस अवसर पर अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जीवन गोसर एवं उनकी पूरी टीम द्वारा संगठन के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त भी किया।

बाबा जोरावरसिंह और बाबा फतेहसिंह की शहादत को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने की पवित्र व गौरवपूर्ण परम्परा प्रारंभ की नरेन्द्र मोदी ने-पाण्डेय

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। 26 दिसम्बर को बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी की शहादत को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने की घोषणा कर भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बहुत ही पवित्र व गौरवपूर्ण परंपरा प्रारंभ की है।

उक्त जानकारी देते हुए सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. रविन्द्र पाण्डेय ने बताया कि जो गौरवपूर्ण कार्य सिख पंथ के दशमेश पु. गुरु गोविंद सिंह जी के परिवार ने किया वह हम सबके लिए बहुत ही गर्व व श्रद्धा का विषय है। सिख पंथ के दसवें गुरु गोविंदसिंहजी के पुत्रों का बलिदान वीर बाल दिवस के लिए वीरता का बहुत बडा उदाहरण भारतीय इतिहास में है परंतु दुर्भाग्य था कि आजादी के बाद जो गौरवपूर्ण विषय पाठ्यक्रमों में विद्यालयों में हमें पढाया जाना था वह नहीं पढाया गया और जो वीर हमारे देश में हुए उनको भुला दिया गया और मध्यकाल का वह इतिहास पढाया गया जो मुगल आक्रांता थे जिन्होंने इस देश को जो सोने की चिडिया था उसको लूटा और हिंदुओं के देवस्थानों को नष्ट किया और देश में बडे पैमाने पर धर्मांतरण किया उन मुगलों को महिमा मंडित किया गया जो बडा दुर्भाग्यपूर्ण था वर्तमान परिपेक्ष में भारत सरकार बहुत अच्छे निर्णय ले रही है जिससे अपनी भावी पीढी को इतिहास की गौरवपूर्ण घटनाएं पात्र और वीरों का इतिहास हमें पढने को मिल रहा है निश्चित ही यह भारत सरकार का कार्य देश का गौरव और मान बढाने का कार्य है। श्री पाण्डेय ने बताया कि वीर बाल दिवस खालसा पंथ के चार साहिबजादों के बलिदान को सम्मान देने के लिए मनाया जा रहा है.पु. गुरु गोविंद सिंह जी दशमेश गुरु कहलाये सिख पु.गुरु गोबिंद सिंह के छोटे छोटे बेटों ने अपने धर्म आस्था की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे, 26 दिसंबर 1704 में आज के ही दिन पु. गुरु गोबिंद सिंह जी के दो साहिबजादे जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी को इस्लाम धर्म कबूल न करने पर सरहिंद के नवाब ने दीवार में जिंदा चुनवा दिया था, माता गुजरी जी को किले की दीवार से गिराकर शहीद कर दिया गया था। यह दिन हमारे बच्चों को स्कूलों मे सांता क्लॉज बनाने का नहीं है। यह उनकी कहानियों को याद करने का भी दिन और यह जानने का भी दिन है कि कैसे उनकी निर्मम हत्या सात वर्ष ओर नो वर्ष की आयु मे की गई- खासकर जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी की.।

नीमच में परोपकार के कार्यों के लिए सहयोग करने वालों की कोई कमी नहीं-जैन

नीमच सिविल अस्पताल में थेलेसिमिया वार्ड का शुभारंभ

नीमच, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। बीमारी कोई भी हो घर, परिवार के लिए बडा संकट साबित होती है। नीमच जिले में थेलेसिमिया के प्रति जागरूकता एवं उपचार के लिए काफी काम किया जा रहा है। नीमच के सिविल अस्पताल में प्रारंभ किए गए नवीन थेलेसिमिया वार्ड को भविष्य में सर्व सुविधायुक्त आदर्श वार्ड बनायेंगे। आवश्यक संसाधनों से परिपूर्ण इस वार्ड में थेलेसिमिया के मरीजों और उनके परिजनों को अस्पताल से अलग वातावरण उपलब्ध कराने का प्रयास किया जावेगा। यह बात कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने सोमवार को जिला चिकित्सालय नीमच में थेलेसिमिया वार्ड के शुभारंभ समारोह को सम्बोधित करते हुए कही। इस मौके पर देश के जाने माने ब्रोनमैरो ट्रांसप्लांट, विशेषज्ञ डॉ.दिनेश पण्डाकर, डा.चंद्रमोली त्रिपाटी उज्जैन, डॉ.ललीता पण्डाकर उज्जैन, सिविल सर्जन डॉ.महेन्द्र पाटील, डॉ.बी.एल.सिसोदिया, डॉ. विजय भारती, डा.मनीष यादव, डॉ.राजेन्द्र एरन भी उपस्थित थे।

जिला थेलेसिमिया वेलफेयर सोसायटी व्दारा आयोजित इस कार्यक्रम में श्री सत्येन्द्र सिह राठौर ने सोसायटी व्दारा थेलेसिमिया मरीजों के उपचार एवं जागरूकता के लिए संचालित गतिविधियों की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया, कि सोसायटी व्दारा विभिन्न शिविरों के माध्यम से अब तक 583 बोनमेरो डोनर तैयार करवाये गये है। जिले में ब्लाड डोनर्स की कोई कमी नहीं है। उन्होने डॉ.पण्डारकर व्दारा थेलेसिमिया मरीजों की जांच एवं उपचार में किए जा रहे सहयोग के बारे में विशेष रूप से बताया। बोनमैरो विशेषज्ञ डॉ.दिनेश पण्डारकर ने कहा, कि थेलेसिमिया पीडित बच्चों की उचित देखभाल एवं उपचार से बच्चों का जीवन बचाया जा सकता है। उन्होने ब्लड सेपरेशन मशीन की आवश्यकता का विशेष रूप से उल्लेख किया। डॉ.पण्डारकर ने थेलेसिमिया मरीजों को बोनमेरो ट्रांसप्लांट के लिए मरीजों और उनके परिजनों की सहमति एवं सहयोग जरूरी बताया। कार्यक्रम को न.पा.अध्यक्ष श्रीमती स्वांति चौपडा ने भी सम्बोधित किया। श्री सुरेश सिंहल ने थेलेसिमिया मरीजों के उपचार के कार्य में तन मन धन से हर सम्भव सहयोग का विश्वास दिलाया। कार्यक्रम को डॉ.राजेन्द्र एरन ने भी सम्बोधित किया। सिविल सर्जन डॉ.महेन्द्र पाटिल ने अवगत कराया कि नीमच में शासन व्दारा ब्लड सेपरेशन मशीन एवं यूनिट स्थापित करने के लिए फण्डर स्वीकृत कर निविदा कार्यवाही पूर्ण कर ली गई है। स्थल का चयन भी हो गया है। आठ, दस दिन में ब्लड सेपरेशन यूनिट का कार्य प्रारंभ हो जायेगा और लगभग 6 माह में ब्लड सेपरेशन यूनिट स्थापित होकर प्रारंभ कर दी जायेगी। डॉ.दिनेश पण्डारकर, कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने अतिथियों के साथ फीता काटकर थेलेसिमिया वार्ड का उद्घाटन किया और वार्ड का भ्रमण कर अवलोकन किया। प्रारंभ में जिला थेलेसिमिया वेलफेयर सोसायटी के पदाधिकारियों, सर्व श्री सचिन, सुरेश, अनिल, गोयल, चंचल शर्मा, ममता आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सत्येन्द्र सिह राठौर ने किया। इस मौके पर जनप्रतिनिधि, पत्रकारगण, गणमान्य नागरिक, श्री दिनेश मानावत, सुनील रस्तोगी, श्री किशोर जावेरिया, चिकित्सकगण व अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

मंडी के 28 गोदाम की लीज निरस्ती और पुन: आवंटन के मामले में ईओडब्ल्यू ने दर्ज किया प्रकरण

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। कृषि उपज मंडी समिति मंदसौर ने 28 ऐसी फर्मो के भूखंडों के लीज निरस्ती की कारवाई की थी, जो करीब 7-8 वर्षो सें या तो कारोबार नहीं कर रही या दिखावटी कारोबार कर रही थी। बंद पडी फर्मो ने मंडी समिति के भूखंडों पर वर्षो सें कब्जा जमा रखा था। जिसका फायदा वास्तविकव्यापारियों को नहीं मिल रहा था। जब मंडी समिति ने 28 भूखंडों की लीज निरस्त की तो व्यापारियों ने अपर संचालक से सांठगांठ कर उनके साथ बड़ा लेनदेन कर मंडी सचिव के आदेश पर रोक लगवाकर पुन: एकल आदेश से भूखंडों पर कब्जा कर लिया। अगर यही भूखंड पुन: नीलाम होते तो मंडी समिति को करोड़ों रुपए राजस्व प्राप्त होता।

10 नवंबर 2022 को कृषि उपज मंडी समिति ने 28 दुकानों/गोदाम के आवंटन निरस्त किए थे। मंडी समिति के तत्कालीन सचिव एवं भार साधक अधिकारी ने 28 गोदामो की लीज निरस्त करने के पीछे अलग-अलग कारण बताए थे। किंतु जिन व्यापारियों के गोदाम की लीज निरस्त हुई थी, उन्होंने इसकी अपील मध्यप्रदेश कृषि विपणन बोर्ड भोपाल में की थी। अपील की सुनवाई करते हुए चंद्रशेखर वशिष्ठ उप संचालक मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड भोपाल ने 11 नवंबर 2022 को एकल आदेश से सभी 28 गोदामो की लीज पुन: बहाल कर दी थी। उप संचालक के आदेश के बाद पुन: दिनांक 17 नवंबर 2022 को मंडी सचिव कृषि उपज मंडी मंदसौर ने भार साधक अधिकारी के अनुमोदन से एक पत्र प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड भोपाल को भेजकर इस एकल आदेश पर पुनर्विचार करने हेतु लिखा था। किंतु इस पर पुनर्विचार नही हुआ। इस पूरे प्रकरण की शिकायत मन्दसौर के पत्रकार नरेंद्र धनोतिया ने राज्य आर्थिक अपराध अनुसंधान ब्यूरो (ईओडब्ल्यू) के महानिदेशक के समक्ष की। जिस पर ईओडब्ल्यू ने जांच प्रकरण दर्ज कर जांच शुरु कर दी है। इस मामले में स्वयं तत्कालीन मंडी सचिव और भार साधक अधिकारी ने शासन को भेजे एक पत्र में ये स्वीकार किया था की उप संचालक के आदेश पर अगर पुर्नविचार होता है और ये निर्णय मंडी समिति के पक्ष में होता है तो इससे मंडी समिति को लगभग 18 से 20 करोड रुपए की अतिरिक्त आय होगी तथा जरूरतमंद व्यापारियों को गोदाम आवंटन हो सकेंगे।

हॉकी खिलाड़ी महक का राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। 6 से 11 जनवरी तक जालंधर में होने वाली सालेय सीनियर राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता के लिए मध्य प्रदेश टीम में मंदसौर की हॉकी खिलाडी महक खान का चयन हुआ यह जानकारी हाकी मंदसौर के अध्यक्ष कुलदीप सिंह सिसोदिया व सचिव अविनाश उपाध्याय ने दी उन्होंने बताया कि महक का सिलेक्शन उमरिया में हुई सीनियर राज्य प्रतियोगिता में उत्कृष्टखेल के आधार पर किया गया राष्ट्रीय स्तर से पहले महक 30 दिसंबर से 3 जनवरी तक उमरिया में लगाए जा रहे राष्ट्रीय स्तर कैंप में हिस्सा लेगी। महक की हॉकी की शुरुआत आज से 3 वर्ष पहले बालागंज विद्यालय से हुई जब वह यही 9वीं कक्षा की विद्यार्थी थी। महक को ग्राउंड लाने में बालागंज स्कूल के प्रिंसिपल सुदीप दास सर का भी बहुमूल्य योगदान रहा उनके यहां प्रिंसिपल पद पर आने के बाद उन्होंने यहां हॉकी एसोसिएशन व खेल विभाग से बात करके हॉकी की शुरुआत कराई इसके बाद महकने पीछे मुड़कर नहीं देखा वह आज भी तीन से चार घंटे हॉकी का अभ्यास करती है महक के पिता रईस खान सेंटिंग के काम से संबंधित काम करते हैं। बालिका की इस उपलब्धि पर हॉकी मंदसौर के संरक्षक यशपाल सिंह सिसोदिया, विनोद जी गर्ग, विशाल गोयल, त्रिभुवन कविश्वर, जिला खेल अधिकारी विजेंद्र देवडा, हॉकी मंदसौर के संरक्षक यशपाल सिंह सिसोदिया, विनोद जी गर्ग, विशाल गोयल, त्रिभुवन कविश्वर, जिला खेल अधिकारी विजेंद्र देवडा, कोच रवि कोपरगांवकर, दिनेश यादव, शैलेंद्र मसीह, खेलो इंडिया एन,आई,एस कोच वैभव चौरसिया, मीत चौहान, मंगल बैरागी, ओमप्रकाश गुर्जर, राजेंद्र सिंह, भरत सिंह, शासकीय महाविद्यालय मंदसौर के खेल अधिकारी राजू कुमार, शासकीय महाविद्यालय दलोदा के खेल अधिकारी अब्दुल रज्जाक, सीनियर खिलाडी संजय तोमर, मनोज जैन, अंकित मंडोर, राकेश श्रीवास्तव, भारत कविश्वर, अजय सिंह गौड, कमलेश शर्मा, शैलेंद्र परिहार, पिंटू आर्थर, डॉ हिमांशु यजुर्वेदी दुबेला क्लब के अध्यक्ष श्री विनय दुबेला, अमर क्लब के अध्यक्ष श्री भानु प्रताप सिंह सिसोदिया, कोच रवि कोपरगांवकर, दिनेश यादव, शैलेंद्र मसीह, खेलो इंडिया एन, आई, एस, कोच वैभव चौरसिया, मीत चौहान, मंगल बैरागी, ओमप्रकाश गुर्जर, राजेंद्र सिंह, भरत सिंह आदि ने बधाई दी व उनकी उज्वल भविष्य की कामना की।

आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय की जयंती आज मनाई जाएगी

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय की जयंती आज 26 दिसम्बर को भव्य रूप से बनाई जाएगी। आज पशुपतिनाथ मंदिर परिसर स्थित भगवान दत्तात्रेय मंदिर में गोस्वामी समाज के जिला अध्यक्ष भेरुपूरी ढाबला की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसके तहत प्रात: 8.30 भगवान का अभिषेक, पूजन, हवन पश्चात् महाप्रसादी वितरण किया जाएगा।

महंत अर्जुन पुरी गोस्वामी, मंडल अध्यक्ष मांगुपुरी, वरिष्ठसमाजसेवी लक्ष्मणपुरी, रामेश्वर पुरी रुपावली, निर्माण समिति अध्यक्ष शैलेंद्र गिरी गोस्वामी, महेशपुरी रुपावली, दशरथ पुरी रुपावली, दिनेश गिरी मंदसौर, कमल गोस्वामी व बगदीगिरी गोस्वामी, मुकेश गिरी, पशुपतिनाथ प्रतीश भारती मंदसौर ब्रह्मपुरी धुंधडका जगदीश गिरी घटावदा ने सभी समाजजनों से आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने की अपील की है।

पुरातत्व के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले लोगों को किया जाएगा सूचीबद्ध

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। संचालनालय-पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय भोपाल द्वारा पुरातत्व के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले पुरातत्वविद, इतिहासकार, स्वयंसेवी, गाइड, शोधार्थी एवं सेवानिवृत्ति वरिष्ठ नागरिकों को सूचीबद्ध किए जाने की पहल की जा रही है। ऐसे व्यक्ति जो स्मारक या संग्रहालय में होने वाली पुरातात्विक गतिविधियों में अपना योगदान देने के इच्छुक हैं। वे 30 दिसंबर 2023 को राज्य संग्रहालय भोपाल में अपने आवेदन के साथ अपराह्न 3 बजे तक उपस्थित हो सकते है। आवेदन के अवलोकन के बाद ऑन द स्पॉट पंजीयन किया जाएगा। इस पंजीयन के बाद आवेदक किस तरह से स्वयंसेवी के रूम में गतिविधि के माध्यम से योगदान देगा, यह बताया जाएगा। साथ ही किस प्रकार कार्य किया जाए, इसके बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। इसके लिए आवेदन ईमेल रिलिहरशश्रिसिंहुसारस्ऱ्लछ.लिपर भी भेजा जा सकता हैं।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा-सांसद

विकसित भारत संकल्प यात्रा गांव- गांव में कर रही है भ्रमण

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान सांसद श्री सुधीर गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ रहा है। सरकार ने विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाएं बनाई है जिससे हर पात्र व्यक्तियों को लाभ मिल रहा है। हर घर जल अभियान अंतर्गत सभी घरों में शुद्ध पीने का जल नल से मिलेगा। आयुष्मान कार्ड से 5 लाख रु तक का इलाज नि:शुल्क होता है। इस दौरान सांसद श्री सुधीर गुप्ता, श्री नानालाल अटोलिया, स्थानीय जनप्रतिनिधि, अधिकारी कर्मचारी एवं ग्रामीण जन उपस्थित थे। विकसित भारत संकल्प यात्रा ने जनपद पंचायत मंदसौर के ग्राम बनी, पानपुर, धंधोड़ा एवं दमदम, जनपद पंचायत मल्हारगढ़ में यात्रा अरनिया जटिया एवं डोबरा, जनपद पंचायत गरोठ में यात्रा देवरिया एवं डाबला मोहन, जनपद पंचायत भानपुरा में यात्रा गोविंदखेड़ा एवं चौकी में भ्रमण किया।

ग्राम उदपुरा में लाभार्थियों से संवाद किया–विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान सांसद श्री सुधीर गुप्ता ने मल्हारगढ़ विधानसभा के ग्राम उदपुरा में सहभागिता कर हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किया। जिसके अंतर्गत आयुष्मान योजना कार्ड, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना से स्प्रिंकलर, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से गैस चूल्हा प्रदान किया गया। केन्द्र एवं राज्य की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में ग्रामवासियों को जानकारी दी। भारत सरकार द्वारा देश में ड्रोन दीदी बनाने का संकल्प लिया है जिसके अनुरूप स्वयं सहायता समूह की बहनों को ड्रोन प्रशिक्षण देकर उपलब्ध कराया जायेगा इस दौरान अधिकारियों ने ग्रामीणों के सामने पडोस के खेत में ड्रोन के माध्यम से दवाई छिड़कर बताई। गांव की ही मीनाक्षी नागर ने आजीविका मिशन से जुड़कर आज लखपति दीदी बनी है और आसपास के 15-20 ग्रामों में लगभग 80 समूहों का गठन कराया और 7 समूहों को आरएफ राशि प्रदान की है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा आज इन गांवों में भ्रमण करेंगी– विकसित भारत संकल्पर यात्रा 26दिसंबर 2023 को यात्रा ने जनपद पंचायत मंदसौर के ग्राम डिगावमाली, अरनिया निजामुद्दीन, गरोड़ाएवं सागवली, जनपद पंचायत मल्हारगढ़ में यात्रा टकरावद एवं हिंगोरिया छोटा, जनपद पंचायत गरोठ में यात्रा रलायती एवं मोलाखेड़ी बुजुर्ग, जनपद पंचायत भानपुरा में यात्रा पगा, खजुरना, जनपद पंचायत सीतामऊ में ढिकनिया, कोटडामाता, शक्कयरखेड़ी जागीरएवं खेजडिया में भ्रमण करेंगी।

सीएम राइज शाउमा विद्यालय गुर्जरबड़िया के 100 विद्यार्थियों ने खोज यात्रा में किया ज्ञानार्जन

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सी.एम. राइज शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुर्जरबर्डिया के 100 विद्यार्थियों ने विद्यालय के शिक्षकों के साथ बस द्वारा मन्दसौर जिले में स्थित लेटेराइट चट्टान पर चौथी पाँचवी शताब्दी के दौरान निर्मित रॉक कट टेंपल धर्मराजेश्वर मंदिर एवं गुफ़ाओ का भ्रमण किया एवं प्राचीनतम जानकारीयों का ज्ञानार्जन किया।

खोज दल का अगला पड़ाव गाँधी सागर स्थित निर्मित मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा संचालित हिंगलाज रिसॉर्ट का भ्रमण कर वहाँ निर्मित छतरिनुमा टावर से विहंगम रिसॉर्ट जल दृश्य का अविराम नजरों तक देखा एवं वहाँ पर लगे हुए चकरी झूले का विद्यार्थियों ने आनंद लिया, साथ ही चम्बल नदी पर बने गाँधी सागर बांध के पावर हाउस का अवलोकन कर जल द्वारा विद्युत उत्पादन के बारे में वहाँ नियुक्त अधिकारियों द्वारा विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री राजेश कुमार मिश्रा ने गाँधी सागर बांध के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह डेम सन 1960 में निर्मित हुआ। यह एशिया महाद्वीप में एकमात्र मानव निर्मित बांध होकर यह बांध जल विद्युत उत्पादन, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण के काम आता है, इस बांध से 115 मेगावाट बिजली प्रतिदिन उत्पादन होती है, जिसका उपयोग हमारे दैनिक कार्यों में किया जाता है। सभी विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण जानकारी को अपने डायरी में नोट किया। इसी कड़ी में माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक दशरथलाल पाटीदार, प्रभावी कमलेश भट्ड, अश्विन चोबे, फराह अंसारी, प्रफुल्ल पालरिया ने विद्यार्थियों को हिंगलाज रिसॉर्ट, धर्मराजेश्वर मंदिर एवं गाँधीसागर के विषय में विस्तार से विद्यार्थियों को समझाया। इस खोज यात्रा में विद्यार्थियों के साथ श्री विनोद धाकड, राजेश गुर्जर, सरिता सोनी, निशा जगावत, संजना राठोर, नेहा व्यास, श्यामलाल शर्मा, निरुल माथुर, ने अनुशासन बनाने मे भरपूर सहयोग प्रदान किया। अंत में सभी ने चंबल माता मंदिर के पास सहभोज किया एवं पश्चात दल वापस विद्यालय पहुँचा।

हिंदू जागरण मंच मालवा प्रांत का दो दिवसीय अभ्यास वर्ग संपन्न

सामाजिक एकता के लिए समस्याओं के खिलाफ जाग्रति आवश्यक -भार्गव

नीमच, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सभी समाजों में राग द्वेष भाव, वैचारिक मतभेद मिटाकर सामाजिक समरसता की स्थापना करना हिंदू जागरण मंच कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है।क्षेत्र में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों जुलूस में हिंदू समाज की भागीदारी के लिए सभी को जागृति लाना आवश्यक है। आरती के समय मंदिरों के भीतर और मंदिरों के बाहर भी श्रद्धालु मंदिर मे इलेक्ट्रॉनिक मशीन का उपयोग बंद हो भक्तों की उपस्थिति अनिवार्य है। तभी सामाजिक क्रांति के परिवर्तन आ सकते हैं और समाज में समानता स्थापित हो सकती है।

यह बात हिंदू जागरण मंच के मालवा प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री प्रचारक राजेश भार्गव ने कही।वे हिंदू जागरण मंच मालवा प्रांत जिला नीमच के तत्वावधान में संगठन को नए स्वरूप का क्रियांवन करने के उद्देश्य से द्वितीय दिवस 22 दिसंबर को सांय 5 बजे पारसमणी गार्डन के सभा कक्ष में अभ्यास वर्ग आयोजन के शुभारंभ अवसर पर आयोजित सभा में बोल रहे थे। उन्होंने कहा समाज के वर्गों में उंच नीच की जो गहरी खाई है उसे मिटाने का प्रयास करना होगा। समाज विशेष और विधर्मियों द्वारा हिंदू समाज के मंदिरों की भूमि पर अतिक्रमण को रोकने के लिए कानून की सहायता लेना चाहिए।हिंदू समाज के सभी संत भी योद्धा का कार्य करते हैं वे समाज में जागृति लाने का कार्य करते हैं समाज सेवा के क्षेत्र में हमें पर्यावरण संरक्षण पर भी कार्य करना होगा।मृत्यु भोज बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाना होगा।मदिरा और नशा मुक्ति के लिए रोक्ना और रोक्ना होगा। तभी समाज में सुधार आएगा।पुराण की ओर यशवंत केलकर की पुस्तक को सभी पढ़कर समाज विकास के लिए आगे बढ सकते हैं।भारतीय संस्कृति के संस्कारों की रक्षा के लिए संस्कारों का समय-समय पर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। सिख समाज हिंदू समाज का ही एक अंग है उसे अलग नहीं समझे।प्रशिक्षण शिविर और वर्ग के माध्यम से युवा वर्ग को अनुशासन के साथ सामाजिक जीवन जीना सिखते हैं। सामाजिक जीवन में रहना की एक अनुभव होता है। सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़कर एकाग्रता के साथ समाज विकास पर कार्य करना जीवन का अपना एक अलग अनुभव होता है। समाज में इस प्रकार कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देना कि किसी भी सामाजिक समस्याओं और गलत कार्यों के खिलाफ समाज संगठित होकर आगे बढे, झुके नहीं, रुके नहीं और समाज में निरंतर कार्य करता रहे। समाज को संगठित करने के लिए 1857 की आजादी लड़ाई में नीमच क्षेत्र के भी अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व बलिदान होने वाले लोगों की पुण्यतिथि जयंती मनाना भी एक माध्यम है।

मालवा प्रांत के कार्यकारिणी सदस्य भगवान सिंह चौहान ने कहा कि सामाजिक बुराई के खिलाफ हिंदू समाज समाज के सभी वर्गों को होने वाले अत्याचारों के खिलाफ जिला प्रशासन पुलिस अधिकारियों को धरना प्रदर्शन ज्ञापन एवं चरणबद्ध आंदोलन के माध्यम से समय-समय पर सूचना देकर सामाजिक अत्याचारों पर अंकुश लगाना प्रत्येक समाज जन का कर्तव्य होता है। तभी विकसित समाज के निर्माण हो सकता है। जिला संयोजक अजय सिंह कच्छावा ने कहा कि भुमि अतिक्रमण शासन कि भुमि को विधर्मियों के कब्जे से मुक्त हो। नऐ कब्जे होने नहीं देंगे ओर पुराने आरटीआई फाईल करें।समाज के वैवाहिक कार्यक्रमों में पहले नाचने वाली बुलाई जाती थी ओर परिवार व्यवस्थाओं मे लगे रहते थे आज खाना बनाने वाले रखने लगे ओर स्वयं नाचने लगे अनुचित है प्राचीन काल में राजा महाराजा नाचने वाली बुलाते थे।सोशल मिडिया पर औरते लड़कियों द्वारा महिलाएं सड़कों पर नृत्य कर रही है यह अनुचित है।सोशल मीडिया दो धारी तलवार है इस पर किसी भी प्रकार की जानकारी डालने से पहले सोशल मीडिया के बचाव के तकनीक को जरूर सीखें। सोशल मीडिया में फोटो शेयर करने से पहले उसे लोक अवश्य करें ताकि उसे फोटो का कोई दुरुपयोग नहीं कर सके। रिएक्शन मोड पर कभी भी वीडियो नहीं बनाएं। सोशल मीडिया से पुलिस अधिकतर मुलजिमो तक पहुंच रही है। प्राचीन काल में मंदिर जाना पैदल चलना शरीर को स्वस्थ बनाने का एक माध्यम था लेकिन लोगों ने पैदल चलना मंदिर जाना वाहनों की सवारी कर शरीर को रोगी बना लिया। राम रहीम की आड़ में हिंदू समाज को अधिकतर प्रताड़ित ही किया गया है। हिन्दू समाज कि रक्षा के लिए शास्त्र व शस्त्र दोनों आवश्यक है इसके बिना हिंदू समाज किसी भी बुराई से नहीं लड सकता है। सामाजिक समस्या के खिलाफ सभी समाजों के साथ मिलकर शिक्षा को हथियार बनाना होगा।अभी देश में हिंदू समाज सुरक्षित रह सकता है।अभ्यास वर्ग में जिला सह संयोजक, आयाम टोली, नगर टोली, खंड टोली, नवीन जिला आयाम टोली नगर आयाम टोली, आदि दायित्व वान कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर परआदि समाज जन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कश ट्रॉफी ऑल इंडिया फुटबॉल टूर्नामेंट आज से

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। चंबल फुटबॉल क्लब मंदसौर द्वारा दिवंगत फुटबॉल खिलाड़ियों स्व. जितेंद्र सिंह मसराम और स्व. गौरव गिरवाल की स्मृति में आयोजित किया जाने वाला कश ट्रॉफी फुटबॉल टूर्नामेंट आज 26 दिसम्बर से शासकीय पी. जी कॉलेज ग्राउंड मंदसौर में शुरू होने जा रहा है। इस आयोजन को लेकर क्लब समिति द्वारा आवश्यक सभी तैयारियां पूरी कर ली है। समिति द्वारा ग्राउंड को फुटबॉल टूर्नामेंट के तय मानकों के हिसाब से तैयार किया गया है। इस टूर्नामेंट में तमिलनाडू, नीमच, मुम्बई, अकोला, छिंदवाड़ा, राजस्थान, पंजाब, झारखण्ड से 12 टीमें भाग ले रही है। टूर्नामेंट में आज प्रथम दिन शुभारंभ मैच दोपहर 12 बजे डी. के. फार्मा मुम्बई और छिंदवाड़ा एफ.सी. के बीच खेला जाएगा। दोप. 3 बजे द्वितीय मैच चंबल एफ.सी. मंदसौर और कासा फुटबॉल एकेडमी बड़वानी के बीच खेला जाएगा। टूर्नामेंट का फायनल मैच 31 दिसम्बर को खेला जाएगा। मंदसौर में प्रथम बार आयोजित होने वाले ऑल इंडिया फुटबॉल टूर्नामेंट के आयोजन को सफल बनाने के लिए क्लब सभी नगर वासियों से आग्रह करती है। उपरोक्त जानकारी क्लब सचिव श्री ईश्वर सिंह चौहान ने प्रदान की।

जुआ खेलते 3 को पकड़ा

पिपलियामंडी, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने ताशपत्ती से जुआ खेलते हुए 3 आरोपियों को पकड़ा। पुलिस ने कृषि उपज मंडी में ताशपत्ती से जुआ खेलते हुए टीलाखेड़ा निवासी रोहित पिता कमल चोहान, कसाई मोहल्ला निवासी जावेद पिता साबिर पठान, अजुमन गली निवासी शानू पिता मोहम्मद कुरेशी को ताशपत्ती से जुआ खेलते हुए पकड़ा। इनके कब्जे से नकदी राशि भी बरामद की।

शराब सहित पकडा:- नाहरगढ़ पुलिस ने 19 क्वार्टर देशी शराब के साथ बड़ा हिगोरिया निवासी बंशीलाल पिता रामलाल को व 20 क्वार्टर के साथ मंगलेश पिता शंकरलाल को पकड़ा। आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट में केस दर्ज किया।

शोक संदेश/अंतिम यात्रा

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है की संतोषजी फरक्या के सुपुत्र एवं निर्मल फरक्या के बड़े भाई विमल फरक्या का उपचार के दौरान अहमदाबाद में आकस्मिक निधन हो गया है जिनकी अंतिम यात्रा मंगलवार दिनांक 26/12/2023 को प्रात: 10.00 बजे निवास स्थान डाक बंगले के सामने से निकलेगी।

***** शोकाकुल *****

समस्त फरक्या परिवार

पिपलियामंडी (बालागुड़ा वाला)

फर्म – एक्शन कलेक्शन (रेडीमेड)

लेखा समाधान की बैठक 29 को

मंदसौर, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा बताया गया कि लेखा समाधान की बैठक आयोजित की गई है। बैठक 29 दिसंबर को दोपहर 12.30 बजे जिला पंचायत मंदसौर में आयोजित की गई है। व्यय लेखे को प्रस्तुत करने की अंतिम तारिख से पहले सभी अभ्यर्थियों/ निर्वाचन एजेंटो के लिए एक दिवसीय फेशिटिलेशन कार्यक्रम का 26 दिसंबर को जिला पंचायत के सभागृह मंदसौर में दोपहर 12.30 बजे आयोजन किया गया।

धनोतिया परिवार के सहयोग से विशाल नि:शुल्क नेत्र शिविर आज

सुवासरा, 25 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सुवासरा नगर में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी नेत्रदान महादान सेवा समिति एवं सेवा भारती सुवासरा तथा जिला अंधत्त्व निवारण के तत्वाधान में लाभमुनि नेत्र चिकित्सालय मंदसौर के द्वारा स्वर्गीय पूरणमल मोतीलाल धनोतिया की पूर्ण स्मृति में धनोतिया परिवार के सहयोग से विशाल नि शुल्क नेत्र शिविर आज दिनांक 26.12. 2023 वार मंगलवार को समय प्रात: 10 से 2 बजे स्थान शासकीय चिकित्सालय नगर परिषद के सामने सुवासरा विशेष सूचना मरीजों को अपने साथ आधार कार्ड की फोटो कॉपी लाना अनिवार्य है नेत्र रोगियो गर्म कंबल एवं पानी की बोतल भी साथ लावे शिविर में नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सा द्वारा आधुनिक कंप्यूटराइज मशीन के द्वारा मोतियाबिंद की जांच की जावेगी तथा चयनित रोगियों को मंदसौर ले जाकर नि:शुल्क ऑपरेशन किए जाएंगे रोगियों को सुवासरा से मंदसौर लाना ले जाने की व्यवस्था आवास भोजन चश्मे की व्यवस्था निशुल्क रहेगी मरीज नेत्र का अधिक से अधिक लाभ ले संपर्क सूत्र सिविल हॉस्पिटल सुवासरा सेठिया मेडिकल सुवासरा जन सेवा समिति सुवासरा के द्वारा इन समस्त समाचार पत्रों के माध्यम से सूचित किया जाता है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर इस शिविर को सफल बनाएं।

कार्यालय- दीपक सैनी एडव्होकेट

गौल चौराहा नई आबादी स्कीम नंबर-2 रोड़ नं. 3. मंदसौर

मोबाईल 8085621888, 7987714980 फोन नंबर 07422-356589)

दिनांक- 25.12.2023

***जाहिर सूचना ***

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पक्षकार अशोक धाकड पिता मांगीलाल जी धाकड, निवासी ग्राम बडवन तहसील व जिला मंदसौर के स्वामित्व, स्वत्व एवं आधिपत्य का एक आवासीय मकान नंबर 398 वार्ड क्रमांक 8, ग्राम बडवन, पटवारी हल्का नंबर 58 तहसील व जिला मंदसौर का सह स्वामित्व विधिवत रजिस्टर्ड सह स्वामित्व विलेख पत्र ई-पंजीकरण क्रमांक एमपी 249392023ए12683257 दिनांक 20.12.2023 से अपनी पत्नि चंदाबाई पति अशोक धाकड, निवासी ग्राम बडवन, तहसील व जिला मंदसौर को अपना सह स्वामित्व को बनाया है। उक्त मकान की चर्तु:सीमा व पैमाईश निम्नवत है-

पूर्व में-रास्ता, पश्चिम में- बालाशंकर प्लाट, उत्तर में - बालूराम का मकान, दक्षिण में- शंकरलाल का मकान। पैमाईश- पूर्व से पश्चिम 40 फीट, उत्तर से दक्षिण 37.5 फीट, कुल क्षेत्रफल - 1500 वर्गफीट है।

उक्त संपत्ति पर अशोक धाकड पिता मांगीलाल जी धाकड द्वारा India Shelter Finance Corporation Ltd Branch Mandsaur से ऋण प्राप्त करने हेतु आवेदन प्रस्तुत कर दिया है। यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था, बैंक आदि का भार, बोझ आदि उक्त संपत्ति पर हो तो इस जाहिर सूचना पत्र प्रकाशन से 7 दिवस के अंदर मेरे कार्यालयीन समय में लिखित में मय प्रमाण के प्रस्तुत करें। वरना बाद गुजरने मियाद किसी प्रकार की कोई आपत्ति मेरे पक्षकार पर बंधनकारी नहीं होगी। सो सूचित हो।

भवदीय

दीपक सैनी, एडव्होकेट मंदसौर

कार्यालय अधीक्षण यंत्री, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा

उज्जैन मण्डल, उज्जैन, कोठी महल के पीछे, उज्जैन (म.प्र.)

Telephone-0734-2510919, Email-seresujjain@mp.gov.in

क्रमांक/1685/तक./ग्रायांसे/2023 उज्जैन, दिनांक-21.12.2023

संक्षिप्त निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक 10/2023-24

उज्जैन मण्डल अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की गई है। उल्लेखित कार्यो का विस्तृत विवरण वेबसाईट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

स.क्र.	जिले का नाम	ऑनलाईन टेण्डर आईडी क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (राशि रु. लाख में)
1	2	3	4	5
1	उज्जैन	2023_RES_320355	श्री राम मंदिर महिदपुर रोड	33.15
2	उज्जैन	2023_RES_320356	श्री राम मंदिर ग्राम झारड़ा	88.53
3	मंदसौर	2023_RES_320360	श्री चारभूजानाथ मंदिर ग्राम कुचड़ोद	28.61
4	आगर मालवा	2023_RES_320361	बी.टी. रोड निर्माण पचेटी जोड से बड़ी माता मंदिर तक	37.86
5	शाजापुर	2023_RES_320362	श्री राम मंदिर विकास कार्य, ग्राम खडेरिया	60.34
6	मंदसौर	2023_RES_321498	ग्राम सूठी में स्टॉप डेम निर्माण एवं पर्यावरण संरक्षण कार्य	188.91

उपरोक्त निविदाओं का निविदा प्रपत्र (टेण्डर डाक्यूमेंट) वेबसाईट https://mptenders.gov.in पर ऑनलाईन भुगतान कर क्रय किया जा सकेगा। निविदा प्रपत्र पोर्टल पर दिनांक 27.12.2023 से प्रातः 10.30 से उपलब्ध होगा। प्री-बीड मीटिंग दिनांक 29.12.2023 प्रातः 11.30 बजे इस कार्यालय में रखी गई है। निविदा प्रपत्र क्रय करने एवं ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 09.01.2024 समय 17.30 बजे तक निर्धारित है। विस्तृत निविदा सूचना व अन्य जानकारी वेबसाईट पर देखी जा सकती है। उक्त निविदा दिनांक 15.01.2024 को कार्यालय अधीक्षण यंत्री, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, उज्जैन मण्डल, उज्जैन में खोली जावेगी।

(पवन बैरागी)

अधीक्षण यंत्री, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा

उज्जैन मण्डल, उज्जैन

G-22252/23 **दुर्घटना से रखनी दूरी है तो हेलमेट सबसे जरूरी है।**

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्यिा एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in